रात्रि क्लास 4/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बच्चों को समाचार सुनाया। बच्चों को बहलाया? फिर तुमको कहेंगे भाइयों को वा बहनों को बहलाया। यहाँ जो आते हैं समझते हैं हम बाप के पास जाते हैं। बाप भी समझते हैं बच्चे आते हैं। यह हो गया फादरली लव। और कोई जगह ऐसा लव हो नहीं सकता। भगवानुवाच मनुष्यों ने सुना है। समझना चाहिए भगवान परमपिता है तो हम बालक ठहरे। शरीर का बाप तो होता ही है। बाकी आत्माएँ पारलौकिक बाप को याद करती है। सभी आत्माओं का बाप एक है। वह हो गया बेहद का बाप जिससे बेहद का वरसा मिलता है। भगवान तो नई दुनिया स्वर्ग का रचयिता है। बाप जानते हैं यह आत्माएँ मेरे बच्चे हैं। बच्चे काम चिक्षा पर बैठ काले हो गये हैं। फिर ज्ञान चिक्षा पर बैठाये गोरा बनाते हैं। यह बातें साधु सन्त कोई बता न सके। और बच्चे भी कह न सके। प्रजापिता ब्रह्मा है एडाप्टेड बाप। लौकिक बाप को प्रजापिता नहीं कहेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा है। इतनी ढेर प्रजा तो जरूर एडाप्टेड होगी। बातें बड़ी सहज समझने की हैं। योग और ज्ञान भी सहज है। स्टुडेन्ट अपने टीचर को जानते हैं टीचर पढ़ा रहे हैं। तुम जानते हो यह एक ही शरीर में वह बाप, टीचर, सद्गुरु है। ऐसा तो कोई होता नहीं जिसको सुप्रीम फादर, टीचर, सद्गुरु कहा जाये। सुप्रीम कहो वा परमपिता कहो। बात एक ही है। यह तो जानते हो ना कि दो बाप हैं। पारलौकिक बाप को सभी को वरसा देना पड़े। पारलौकिक बाप संगमयुग पर ही आकर स्वर्ग का वरसा देते हैं। बाकी सभी आत्माएँ शान्तिधाम में चली जाती हैं। मुक्ति और जीवनमुक्ति का वरसा मिल जाता है। सुखधाम में शान्ति है। दुखधाम में अशान्ति है। यह किसको समझाना है बहुत सहज। जबकि आत्मा को पवित्र बनना है तो पतित पावन तो एक ही बाप है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो जन्म–जन्मान्तर के पास भस्म होंगे। बाप तो नई दुनिया स्थापन करते हैं। वही स्वर्ग का मालिक बना सकते हैं। बच्चे यहाँ यह समझ कर आते हैं हम बेहद के बाप के पास जाते हैं। स्वर्ग का वरसा लेने। तो दैवीगुण भी धारण करनी है जब कि दैवी दुनिया में जाते हैं। तो अवगुण को छोड़ना पड़े। देवताएँ तो सर्वगुण सम्पन्न हैं ना। यह भी बताया है एक है मनुष्य मत, दूसरी है दैवी मत, एक है आसुरी है, दूसरी है ईश्वरीय मत। ईश्वरीय मत से तुम देवता बनते हो। मानव मत वाले यह ज्ञान दे न सके। मानव मत है भक्ति के मत। उनमें ज्ञान हो न सके। आत्माओं का बाप ही आकर ज्ञान देते हैं। परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है वह ज्ञान किसको देंगे। आत्माओं को देंगे; क्योंकि बेहद का बाप है। आत्माओं से ही बात करते हैं। बच्चों मुझ बाप को निरन्तर याद करो तो जन्म जन्मान्तर के पाप कट जायें। याद की यात्रा से वह तो अपना कल्याण करो। बाकी इस एक जन्म ..... चल देखा जावेगा। जन्म जन्मान्तर के पाप का बोझा जो सिरपर है वह बोझा तो हल्का करो। बात बड़ी सहज है। सिर्फ माया याद की यात्रा भुला देती है। तो टीचर को भी भूल जाते हैं। बाप कहते हैं रावण तुम्हारा पुराना दुश्मन है। इसलिए रावण को जलाते हैं; परन्तु वह कौन हैं, क्यों जलाते हैं वह कुछ भी समझते नहीं हैं। भक्तिमार्ग के ढेर सामग्री है। वह कोई काम के नहीं। बाप समझाते हैं मीठे बच्चे याद करते रहो। माया विघ्न डालेगी पर डरना नहीं। और कोई विकर्म कर्मइन्द्रियों से न करना है। तुम पुराने राज्य में हो ना। यह है बेहद की बात। आधा कल्प से रावण राज्य चल रहा है। तो दुश्मन ठहरा ना। परन्तु समझते नहीं हैं। सतयुग में तो रावण राज्य होता ही नहीं। बहुत सहज बातें हैं जो तुम अभी समझ सकते हो। यह बातें और कोई समझा नहीं सकते। कहते हैं पवित्र बनो। सन्यासी भी पवित्र बनते हैं। परन्तु फायदा क्या। लीन तो होते ही नहीं। वापिस कोई जा नहीं सकते। सभी आत्माएँ अविनाशी हैं। ड्रामा में पार्ट भी अविनाशी है। यह वन्डर है ना। इतनी छोटी आत्मा कब घिसती नहीं। फार एवर रिपीट करती रहती है। नो एण्ड। यह कोई नहीं जानते हैं बाप को मिट्टी में मिलाने से सभी भारतवासी मिट्टी में मिल गये हैं। और मिल ही जावेंगे। मिट्टी में मिलने सिवाय आत्मा वापिस कैसे जावेगी। यह शरीर मिट्टी में मिल जावेगी आत्मा वापिस अपने घर चली जावेगी। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।